विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

त्योहारी सीजन में कारोबार को मिलेगी संजीवनी

देश में त्योहारी सीजन का आगाज़ शुरू हो चुका है। आगामी दिनों में एक के बाद एक त्योहार आने है। उम्मीद की जा रही है इस बार बाजार में दशहरा और दीपावली तक बेहतर रौनक बनी रहेगी। गणेश चतुर्थी पर जिस तरह से विभिन्न प्रकार की चीजों की ब्रिकी से बाजार गुलज़ार हुआ है उससे साफ अंदाजा लगा सकते हैं कि आने वाले सभी त्योहारों पर खरीदारी के लिए ग्राहक मन बना चुके हैं। इसी के साथ कारोबार ने रफ्तार पकड़ ली है। लोग खरीदारी के लिए बाजारों में पहुंच रहे हैं। दुकानें ग्राहकों से गुलजार होने लगी है। बाजारों में चहल पहल व भीड़-भाड़ देखने को मिल रही है। ऑनलाइन शॉपिंग की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा हुआ है। दो वर्ष करोना से प्रभावित रहा। अब कोरोना लगभग खत्म हो गया है। सरकार ने भी बंदिश हटा ली हैं। कोविड की वजह से कारोबारियों को भारी नुकसान हुआ था, जिसकी भरपाई कारोबारियों को त्योहारी सीजन में होने की उम्मीद है। कोरोना से सुस्त पड़ी अर्थव्यवस्था में जान फूंकने के लिए केंद्र सरकार ने अपने प्रयास प्रारम्भ किए हैं। अगस्त महीने में सरकार को 1.43 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का जीएसटी कलेक्शन हुआ है जो कारोबार के लिए उत्साहजनक संकेत कहा जा सकता है। कोरोना के कारण देश की अर्थव्यवस्था की हालत खराब है। यह डिमांड और सप्लाई, दोनों तरफ से प्रभावित है। ऐसे में डिमांड को बूस्ट करने के लिए सरकार की तरफ से छोटे-छोटे और प्रभावी उपाय किए जा रहे हैं। सौ साल में आई सबसे बड़ी महामारी के बीच भारत की अर्थव्यवस्था फिर से गति पकड़ रही है। यह हमारे आर्थिक फैसलों और हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूत बुनियाद का प्रतिबिंब है। अब सरकार त्योहारी मौसम में अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से खोलने और उसे बढ़ावा देने के लिए कदम उठा रही है जो स्वागत योग्य है।

गणेश चतुर्थी से त्योहारी सीजन में बाजार में रौनक लौट रही है। इससे दुकानदारों के चेहरे खिले हुए हैं। दो साल के कोरोना संकट के कारण आर्थिकमंदी से जूझ रहे बाजार में व्यापार की उम्मीद बढ़ी है। दुकानदारों का कहना है कि बाजार में खरीदारी करने वालों की भीड़ बढ़ रही है और आने वाले दिनों में कारोबार बढ़ने की उम्मीद है। त्योहारी सीजन की शुरुआत से इलेक्ट्रॉनिक, कपड़ा, ऑटो मोबाइल, सराफा बाजार में ग्राहकों का रुझान बढ़ा है। देशभर में पर्यटन क्षेत्र फिर से पटरी पर लौटने लगा है। पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की बढ़ती संख्या से न केवल इन स्थलों की रौनक बड़ रही है बल्कि अच्छा कारोबार होने से कारोबारियों के चेहरों पर चमक देखने को मिल रही है। पर्यटन कारोबारियों का कहना है कि आने वाले दिनों में पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी होने की उम्मीद है।

त्योहारी सीजन में हमारे देश में सुख दुःख की बयार एक साथ बहती है जिसमें डूब कर लोग परम पिता परमेश्वर से खुशहाली की कामना करते है। लोकमंगल के इस सीजन में बच्चे से बुजुर्ग तक खुशियां बांटते है। भारत त्योहारों का देश है। त्योहार देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक बुनियाद को मजबूत बनाने और समाज को जोड़ने का काम करते हैं।

अच्छा कारोबार होने से सभी कारोबारियों को आर्थिक लाभ मिलेगा। नवरात्रि सहित इस त्योहारी सीजन में एक दर्जन बड़े त्योहार और व्रत आते है जिसमें देशवासी उमंग और उत्साह के साथ शामिल होकर अपनी खुशियों का इजहार करते है।

यह त्योहारी सीजन हालाँकि महंगाई की मार से उपभोक्ताओं को राहत भरा नहीं है। त्योहारी सीजन शुरू होने के साथ ही बाजार और ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट्स पर ऑफर्स की बहार आ गई है। दुकानदार और ऑनलाइन कम्पनियाँ जहां इन त्योहारों में आकर्षक ऑफर तथा डिस्काउंट की पेशकश कर ग्राहकों को रिझाने का प्रयास करते हैं, वहीं ग्राहक भी इन आकर्षक ऑफरों का लाभ उठाकर जमकर खरीदारी करते हैं।

सरकारी बैंकों सहित कई कम्पनियाँ और निर्माता उपभोक्ताओं को लुभावनी छूट से भी लाभान्वित कर रहे है। त्योहारी सीजन को ध्यान में रखते हुए ये सेल शुरू हुई है। दुकानदारों ने भी आकर्षित ढंग से दुकानों को सजाना शुरू कर दिया है, ताकि अच्छा व्यापार हो सके। खुदरा व्यापारी ऑनलाइन सेल का विरोध कर रहे है और अपने व्यापार के चौपट होने की दुहाई दे रहे है मगर उपभोक्ता ऑनलाइन व्यापार से खुश नजर आ रहे है। उन्हें बाजार की धकमपेल से छुटकारा मिल रहा है। ऑनलाइन सेल में सामान सस्ता जरूर मिल रहा है मगर उपभोक्ता को सावधानी रखनी पड़ेगी क्योकि ठगी करने वाले गिरोह भी सक्रीय हो गए है। जो भोले भले लोगों को सस्ते माल के चक्कर में फंसा कर अपना उल्लू सीधा कर रहे है। ऐसे में लोगों ने सतर्कता नहीं रखी तो सस्ते में माल खरीदना महंगा भी पड़ सकता है।

त्योहारी सीजन धोखे और ठगी से अछूते नहीं है। साइबर क्राइम भी चरम पर है। आये दिन लोगों के बैंक खातों से पैसे निकल जाने की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। चोर उचके भी त्योहारी सीजन का इंतजार करते है। लोग त्यौहार की खरीददारी में व्यस्त हो जाते है तो ऑनलाइन ठग भी अपनी कारिस्तानी से बाज नहीं आते जिसमें न चाहते भी लोग थोड़े से लालच में आ कर फंस जाते है। इसलिए कहा जाता है सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी। इसी दुर्घटना से बचने के लिए समझदारी और सजगता की जरुरत है।

कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ़ आल इंडिया ट्रेडर्स के मुताबिक गणेशोत्सव से दीपावली तक देशभर में 9 से 10 हज़ार करोड़ रूपये के खुदरा कारोबार की उम्मीद है। इसमें ऑनलाइन बिक्री के आंकड़े शामिल नहीं है। इस दौरान अर्थव्यवस्था में भी आशानुरूप उछाल देखने को मिला है। वर्ष 22-23 की प्रथम तिमाही में देश की जीडीपी की ग्रोथ रत 13.5 प्रतिशत ब्रह्म है अर्थव्यवस्था में मज़बूती से बाजार को सुदृढ्ढीकरण की आश जगी है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के बाज़ारों के गुलज़ार होने की उम्मीद है।

त्योहारी सीजन में हमारे देश में सुख दुःख की बयार एक साथ बहती है जिसमें डूब कर लोग परम पिता परमेश्वर से खुशहाली की कामना करते है। लोकमंगल के इस सीजन में बच्चे से बुजुर्ग तक खुशियां बांटते है। भारत त्योहारों का देश है। त्योहार देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक बुनियाद को मजबूत बनाने और समाज को जोड़ने का काम करते हैं। गरीब से अमीर तक त्योहारों की खुशियों में खो जाते है। अब त्योहारी सीजन शुरू हो गया है तो देशवासी महंगाई की बेरहम मार के बावजूद त्योहारों को हंसी खुशी से मनाने में जुट गए है। लोगों को उम्मीद है कारोबार को पंख लगने से देश की अर्थव्यवस्था भी सुधरेगी।

–अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

राशिफल शनिवार 17 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आश्विनी मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, रोहिणी नक्षत्र दिन 12:21 तक, सिद्धि योग रविवार प्रातः 6:33 तक, बव करण दिन 2:51 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 1:44 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 12:21 तक है। रवियोग दिन 12:22 तक बना रहेगा। द्विपुष्कर योग दिन 12:21 से दिन 2:15 तक है। आज आश्विन संक्रांति सूर्य कन्या में प्रवेश प्रातः 7:22 पर करेगा। पूण्य काल दिन 1:46 तक है। आज रोहिणी व्रत है और महालक्ष्मी व्रत समाप्त होंगे। आज कालाष्टमी, विश्वकर्मा पूजा है और चेहलम मु. है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:48 से 9:19 तक, चर 12:21 से 1:53 तक, लाभ-अमृत 1:53 से 4:55 तक।
राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:26

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

तुला
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक अड़चनें अभी बनी रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में आपसी वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यक्तिगत कार्य के लिए भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

(17 सितंबर - रामास्वामी पेरियार जयंती)

गरीबों, शोषितों एवं दलितों के मसीहा थे राष्ट्रवादी राजनेता ई.वी. रामास्वामी पेरियार

ई.वी. रामास्वामी पेरियार तमिल राष्ट्रवादी राजनेता, समाज सुधारक, गरीबों, शोषितों एवं दलितों के मसीहा थे। उनके प्रशंसक उन्हें आदर के साथ 'पेरियार' संबोधित करते थे। उन्होने 'आत्म सम्मान आन्दोलन' प्रारंभ किया जिसे 'द्रविड़ आन्दोलन' कहा जाता है। उन्होंने जस्टिस पार्टी का गठन किया जिसे 'द्रविड़ कड़गम' पार्टी कहा जाता है।

ई.वी. रामास्वामी पेरियार का पूरा नाम इरोड वेंकट नायकर रामास्वामी पेरियार था। उनका जन्म 17 सितंबर 1879 को इरोड, तमिलनाडु में एक परम्परावादी सम्पन्न हिन्दू परिवार में हुआ। उनके पिता वेंकतप्पा नायडू एक धनी व्यापारी थे। वे सन् 1885 में इरोड प्राथमिक विद्यालय में पाँच साल की प्राथमिक शिक्षा के बाद पिता के व्यवसाय से जुड़े। उन्होंने इरोड के नगर निगम के अध्यक्ष पद पर कार्य करते सामाजिक उत्थान कार्यों को बढ़ावा दिया।

रामास्वामी पेरियार सन् 1904 में काशी यात्रा के दौरान एक दिन भूख लगने पर ब्राह्मणों के लिए निःशुल्क भोजन पंडाल पर गए। वहां उन्हें धक्का मारकर निकाला और अपमानित किया। उसके बाद में वे रुढ़िवादी हिन्दुत्व के घोर विरोधी हो गए। इसके बाद उन्होंने

पन्नलाल मेघवाल

किसी भी धर्म को नहीं स्वीकारा और आजीवन नास्तिक रहे।

उन्होंने सन् 1916 में राजनैतिक संस्था 'साउथ इंडियन लिबरेशन एसोसिएशन' की स्थापना की। इसका उद्देश्य था ब्राह्मण समुदाय के आर्थिक एवं राजनैतिक शक्ति का विरोध तथा गैर-ब्राह्मणों का सामाजिक उत्थान करना। यह संस्था बाद में 'जस्टिस पार्टी' बन गयी।

सन् 1919 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की पहल पर वे कांग्रेस के सदस्य बने। उन्होंने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और गिरफ्तार हुए। सन् 1922 के तिरुपुर सत्र में वे मद्रास प्रेसीडेंसी कांग्रेस समिति के अध्यक्ष बने। उन्होंने सरकारी नौकरियों एवं शिक्षा क्षेत्र में आरक्षण की वकालत की। सन् 1925 में उन्होंने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी।

■ ब्राह्मणों के निःशुल्क भोजन पंडाल से धक्का मारकर निकालने पर वे रुढ़िवादी हिन्दुत्व के घोर विरोधी हो गए

केरल कांग्रेस नेताओं के आग्रह पर पेरियार ने वैकोम आन्दोलन का नेतृत्व किया। यह आन्दोलन मन्दिरों की ओर जाने वाली सड़कों पर दलितों के चलने पर रोक के विरुद्ध था। इस आन्दोलन में उनकी पत्नी और मित्रों ने भी उनका साथ दिया।

पेरियार और उनके समर्थकों ने समाज से असमानता कम करने के लिए अधिकारियों और सरकार पर सदैव दबाव डाला। 'आत्म सम्मान आन्दोलन' का मुख्य उद्देश्य गैर-ब्राह्मण द्रविड़ों को उनके सुनहरे अतीत पर अभिमान कराना था। पेरियार ने 'आत्म सम्मान आन्दोलन' के प्रचार-प्रसार पर पूरा ध्यान केन्द्रित किया। आन्दोलन के प्रचार के लिए सन् 1925

ई.वी. रामास्वामी पेरियार

में तमिल साप्ताहिकी 'कुडी अरासु' एवं सन् 1928 में अंग्रेजी जर्नल 'रिवोल्ट' का प्रकाशन प्रारंभ किया।

सन् 1944 में पेरियार ने जस्टिस पार्टी का नाम बदलकर 'द्रविड़ कड़गम' कर दिया। द्रविड़ कड़गम का प्रभाव शहरी लोगों और विद्यार्थियों पर था। ग्रामीण क्षेत्र भी इसके सन्देश से अछूते नहीं रहे। हिंदी-विरोध और ब्राह्मण रीति-रिवाज़ और कर्म-कांड के विरोध पर सवार होकर द्रविड़ कड़गम ने तेज़ी से पाँव जमाये। द्रविड़ कड़गम ने दलितों में अश्पृश्यता के उन्मूलन के लिए संघर्ष किया और अपना ध्यान महिला-मुक्ति, महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर केन्द्रित किया।

ई.वी. रामास्वामी आजीवन रुढ़िवादी हिन्दुत्व का विरोध करते रहे। उन्होंने बाल विवाह एवं देवदासी प्रथा का विरोध किया वहीं विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। उन्होंने महिलाओं एवं दलितों के शोषण तथा जाति व्यवस्था का खुलकर विरोध किया। उन्होंने भारतीय समाज के गरीब, शोषित एवं दलित वर्ग के लिए आजीवन कार्य किया।

उन्होंने तर्कवाद, आत्म सम्मान एवं महिला अधिकारों के लिए जीवन भर संघर्ष किया। वे जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। उनके कार्यों से भारतीय समाज खासतौर पर तमिल समाज में बहुत परिवर्तन आया और जातिगत भेद-भाव बहुत हद तक कम हुआ।

यूनेस्को ने एक उद्धरण में उन्हें अज्ञानता, अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता का विरोधी, नए युग का पैगम्बर, दक्षिण पूर्व एशिया का सुकरात एवं समाज सुधार आन्दोलन का पितामह कहा था।

- पन्नलाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

लम्पी से मरी गाय को गरीब मजदूर ने खुद के खर्चे से दफनाया

बहरोड़/नीमराना, (निसं)। ग्राम पंचायत रामसिंहपुरा के गांव नासरपुर में लंपी बीमारी की चपेट से गरीब मजदूर संजय नायक की गाय सरकारी इलाज के बिना मर गई। विकास अधिकारी बहरोड़ को सूचना देने पर बोले ओलंपिक में बिजी हूं कागजों पर हस्ताक्षर कर रहा हूं कहकर फोन काट दिया तथा सेक्रेटरी पंचायत समिति बहरोड़ व पशु चिकित्सा विभाग की तरफ से भी मौके पर कोई नहीं पहुंचा।

लंबे समय से निरंतर परेशान होने के बाद गरीब मजदूर ने साहूकार से 2000 उधार लेकर लंपी रोग से मरी गौमाता का रीति रिवाज अनुसार ही

■ प्रशासन को सूचना के बाद भी कोई नहीं पहुंचा

परिजनों के साथ मिलकर अपने खर्चे से ही जेसीबी बुलाकर जोहड़ में गड्ढा खुदवाकर दबाया गया। गौरतलब है कि 16 सितम्बर को ही चिकित्सा मंत्री राजस्थान सरकार को ज्ञापन के माध्यम से मर रही गरीब मजदूरों की गायों के मुआवजे के लिए उपखंड अधिकारी बहरोड़ को अवगत कराया गया है।

ग्राम नासरपुर में संक्रमित गाय को दफनाते मजदूर परिवार।

साठ लाख की लागत से बनी पानी की टंकी 30 साल से नकारा

सूरौठ, (निसं)। तहसील के निकटवर्ती ग्राम पंचायत जटवाड़ा मुख्यालय पर 3 दशक पूर्व सरकार के द्वारा साठ लाख खर्च करके बनाई गई15000 लीटर की क्षमता वाली पेयजल टंकी की सुविधा से ग्रामीण 30 वर्ष बाद भी वंचित हैं।

गांव के राजगिरीश सहारिया पूर्व सरपंच शांति देवी शर्मा सत्येंद्र गंधार सौरभ सहारिया संजय डागुर ओम चौधरी राजेश गंधार आदि ग्रामीणों ने बताया है कि 3 दशक पूर्व सिद्धेश्वर

■ विभाग की लापरवाही की वजह से पाइप लाइनों से घरों को नहीं जोड़ा गया

की पहाड़ी की तलहटी में बनाई गई पेयजल की टंकी को विभाग की लापरवाही की वजह से पाइप लाइनों से घरों को नहीं जोड़ा गया जबकि पूरी गांव के प्रमुख मार्ग में अंडर ग्राउंड सीमेंटेड पाइप लाइन बिछाई गई और टंकी को भरने के लिए नलकूप लगवाए गए।

30 वर्ष बाद भी नल से जल टपकने का सपना ग्रामीणों का आज तक साकार नहीं हो पाया है। गौरतलब है कि हालांकि पेयजल टंकी को ग्रामीणों द्वारा प्रतिदिन पानी से भरा जाता है लेकिन आमजन को टंकी के पानी की सुविधा नहीं मिल पा

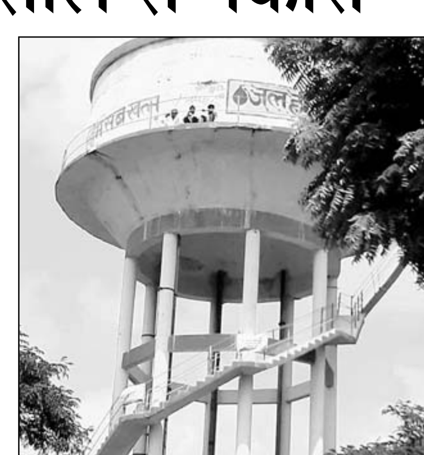

रही है वर्तमान स्थिति में ग्रामीणों के द्वारा निजी खर्चे से अपने घरों से लेकर टंकी तक लोगों की छतों एवं पेड़ों में अधर हवा में नली बांधकर पानी की अस्थाई सुविधा कर रखी है।

ग्रामीणों ने पिछले 30 सालों से लग रहे प्रशासन गांव के संग अभियानों में एवं पूर्व सांसद और वर्तमान सांसद पूर्व विधायक वर्तमान विधायक एवं ग्राम पंचायत से लेकर मुख्यमंत्री तक इस समस्या की शिकायत की है लेकिन समस्या का निराकरण नहीं हो पाया है।

बुहाणा की बेटी मंजुला उत्तर प्रदेश की हायर जुडिशियल सर्विस एग्जाम को टॉप कर जज बनी

बुहाना, (निसं)। तहसील क्षेत्र के ढाणी भालोठ गांव की बेटी मंजुला भालोठिया ने उत्तर प्रदेश न्यायिक सेवा परीक्षा में टॉप किया व पहला स्थान प्राप्त कर जज बनीं। मंजुला इस समय हरियाणा रोडवेज के जींद डिपो में बतौर एडीए कार्यरत हैं। 12 सितंबर को इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा घाषित परिणाम के 31 अभ्यार्थियों की सूची में मंजुला का नाम टॉप में है। मंजूला की शादी हरियाणा में हुई है और उन्होनें यूपी में टॉप किया है।

यूके से एमबीए किया:- मंजुला भालोठिया वैसे तो जयपुर में ही पली-पढ़ी हैं। मंजुला ने 2003 में साफिया कॉलेज अजमेर से इकोनॉमिक्स ऑनर्स से किया। वह वहां से पढ़ने के लिए लंदन चली गई। जहां उन्होंने 2005 में लीड्स बिजनेस स्कूल से एमबीए किया। 2009 में उनकी मुलाकात सुमित अहलावत से हुई। दोनों ने शादी कर ली। इसके बाद उन्होंने राजस्थान से

पिता के साथ बेटी मंजुला

एलएलबी की पढ़ाई की। शादी के बाद मंजुला भगत सिंह फूल सिंह विश्वविद्यालय खानपुर सोनीपत से एलएलएम की है।

पिता धर्मसिंह भालोठिया बताते हैं कि मंजुला पढ़ाई में शुरू से ही अव्वल रहती थी। वर्ष 2009 में शादी करने के बाद भी पढ़ाई नहीं छोड़ी।

घरों में कैद है गुगन की ढाणी का मेघवाल समाज

शिमला, (निसं)। बुहाना की गुगन की ढाणी का मेघवाल समाज घरों में कैद हैं। मेघवाल समाज के लोगों के लिए घर से बाहर निकलने तक का रास्ता नहीं है। 70 साल से प्रचलित रास्ते को रसूखदार किसान ने बंद कर दिया जिसे लोग आने जाने के लिए उपयोग कर रहे थे।

वृद्ध श्योराम सिंह ने बताया कि आजादी के बावजूद भी हम खुली सांस नहीं ले पा रहे है। कहीं से भी कोई साधन आना तो दूर की बात पैदल चलकर आना भी संभव नहीं है। समाज के लोगों ने सरपंच से लेकर जिला कलेक्टर व मुख्यमंत्री तक गुहार लगाई लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई। यही नहीं इस ढाणी में प्राथमिक स्कूल भी है। जिसमें बच्चे अध्ययनरत हैं। लेकिन उस स्कूल में जाने का भी कहीं कोई रास्ता नहीं है। बच्चे व अध्यापक नुकीले तारों की बाड़ में से निकल कर के स्कूल बड़ी मुश्किल से पहुंचते हैं।

स्कूल के शिक्षक एवं छात्र तथा पोषाहार एवं पानी की आपूर्ति पूरी तरह से बाधित हो रही है। इस ढाणी के लिए 23 वर्ष पूर्व सरकार ने राजकीय

दलित परिवार के घर जाने का आम रास्ता जिसे कटीले तार लगाकर बंद कर दिया गया है।

प्राथमिक विद्यालय खोला था। जिसका रास्ता बुहाना से ढाणी के लिए प्रचलित रास्ता आवागमन के लिए प्रयोग में था। इस बारे में शिक्षकों ने सीबीईओ बुहाना एवं तहसीलदार बुहाना को कई बार अवगत करवाया परंतु स्थित जस की तस बनी हुई है।

23 वर्ष पूर्व गुगन राम मेघवाल के पुत्र रामकुमार ने भूमि राज्य सरकार को विद्यालय के लिए दान की थी। जिसका राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज हो गई। परंतु विद्यालय का रास्ता काटानी में नहीं बदला। जिससे यह नासूर बन गया। पूर्व सैनिक श्योराम मेघवाल, वीरेंद्र मेघवाल, विजय, सत्यवीर

■ 70 साल से प्रचलित रास्ते को रसूखदारों ने किया बंद

तुंदवाल, शैलेंद्र, अमित, जयवीर, रतिराम, अजय, श्रीराम, महेश, योगेश, रघुवीर, धनपति, बसंती, धापली, सरिता, मंजू, विजेता, उर्मिला, सोनू, उर्मिला देवी, पूजा, चांदनी, एकता, रेखा, प्रिया, मनीषा आदि ने बताया कि हमारे पूर्वज 70 साल से यहां बस रहे हैं। हमारे बुहाना आने जाने का यही रास्ता प्रचलित था जो अब बंद हैं। अगर ढाणी में कोई बीमार हो जाए तो उसको ले जाने के लिए कोई वाहन नहीं लाया जा सकता चाहे वह दम तोड दे। इस बारे में बुहाना एसडीएम एवं तहसीलदार को कई बार अवगत करवाया जा चुका है। परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। अगर रास्ता नहीं खुलेगा तो संपूर्ण मेघवाल बस्ती के लोग जिला कलेक्ट्रेट पर आमरण अनशन शुरू करेंगे। जिसकी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी।